बस्तर क्षेत्र के दंतेवाड़ा जिला की माड़िया जनजाति के परंपरागत त्यौहार का सामाजिक व सांस्कृतिक महत्ता

Dr. Madhulata Bara[1], Dr. Purohit Kumar Sori[2], Dr. Sunita Sodi[3], Dr. Ramdev Jurri[4]

[1]Professor & Project Coordinator, SoS. in Literature & Languages, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.)
[2]Assistant Professor & Project Co-Coordinator, History Department, Govt. Gundadhur PG. College, Kondagaon (C.G.)
[3]Research Associate, SoS. in Literature & Languages, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.)
[4]Research Assistant, SoS. in Literature & Languages, Pt. Ravishankar Shukla University Raipur (C.G.)

सारांश :

माड़िया जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र के सघन वन क्षेत्रों में निवासरत है, जो अपनी विशिष्ट त्यौहारों, सांस्कृतिक परंपराओं एवं रीति–रिवाजों के लिए जानी जाती है। त्यौहारों को दंतेवाड़ा जिला की माड़िया जनजाति गोंडी बोली में 'पंडुम' कहा जाता है। माड़िया जनजाति के अधिकांश त्यौहार सामान्यतः प्रकृति पूजा पर आधारित होते हैं। जिसे पेड़–पौधे, नदी, पहाड़ व भूमि आदि को देवतुल्य मानकर त्यौहारों में पूर्वजों की पूजा की जाती है और बलि प्रथा भी प्रचलित है। शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माड़िया जनजाति के द्वारा आयोजित पारंपरिक त्यौहारों के महत्व एवं उनमें हुए परिवर्तन का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस शोध आलेख बस्तर क्षेत्र के दंतेवाड़ा जिला की माड़िया जनजाति में प्रचलित त्यौहारों की जानकारी क्षेत्रीय कार्य के द्वारा प्राप्त की गई है। यह शोध प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है। इसमें उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से 50 कुंजी सूचनादाता का चयन कर त्यौहारों से संबंधित जानकारी एकत्रित की गई है। यह अध्ययन क्षेत्रीय कार्य के दौरान लिये गए प्राथमिक तथ्यों पर आधारित है। इनके द्वारा आयोजित त्यौहारों में केवल धार्मिक अनुष्ठानिक क्रियाऐं ही होती हैं, बल्कि अपितु इसमें प्रकृति पर विश्वास तथा इसके प्रति सम्मान, सामाजिक एकता व सहयोग, सांस्कृतिक लोक जीवन और परंपरागत ज्ञान का संरक्षण आदि का समायोजन होता है जो जनजाति पहचान को बनाए रखने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

कुंजीशब्द : बस्तर क्षेत्र, दंतेवाड़ा जिला, माड़िया जनजाति, परंपरागत ज्ञान, त्यौहार, सामाजिक, सांस्कृतिक महत्व, प्रकृति, धार्मिक अनुष्ठान, लोक जीवन, संरक्षण, सामाजिक एकता, सहभागिता, परिवर्तन, देवी–देवता, विश्वास, पुना कुटूम तिंदाना, कुर्मी, कोरता, पेन करसाड, करसाड़, इड़ू पंडुम/मरका पंडुम, भीमसेन जातरा, विज्जा पंडुम, पेन करसाड।

प्रस्तावना :

बस्तर की जनजाति के प्रत्येक पर्वों एवं उत्सवों में प्रकृति किसी न किसी रूप में विद्यमान होती है। वस्तुतः पर्व, उत्सव एवं अनुष्ठान ऐसी क्रियाएं है जिनमें भौगोलिक स्थिति, जलवायु एवं अन्य प्राकृतिक अवयवों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता (Vaishnav] 2014)। त्यौहार केवल धार्मिक आयोजन ही हो सकते हैं और उत्सव में धार्मिक तथा गैर–धार्मिक आयोजन सम्मिलित होते हैं, इसमें धार्मिकता का पुट कम या नहीं के बराबर होता है। यह सभी किसी विशेष घटना का सउद्देश्य स्मरण होता है (Alang evam Alang, 2015)। कोयतूर आदिकाल से प्रकृति पर केंद्रित पर्व ही मनाते आ रहे हैं। इनके द्वारा बीज बुवाई के पूर्व खेतों की, नए फलों के परिपक्व होने पर तथा कृषि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले पशुओं के सम्मान आदि से संबंधित पर्व का आयोजन किया जाता है। नए फलों के त्यौहारों को मनाने के पीछे पूर्वजों का तर्क यह था कि यदि फल परिपक्व होने से पहले ही तोड़ लिए जाएंगे तो उनका अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। इस कारण उनके अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इन फलों को सेवन करने हेतु पूर्वजों कों अर्पित किया जाता है। उसी तरह पहली वर्षा में वनस्पतियां अधिक मात्रा में खनिज एवं लवण अवशोषित कर लेती है जिन्हें खाने पर कई प्रकार की बीमारी होती है (Nuruti, 2022)। जनजातीय समुदाय वर्षभर प्रत्येक पर्व और त्यौहार मनाते रहते हैं। इनके द्वारा मनाये जाने वाले त्यौहार देवता को धन्यवाद देने, नई फसल में उपज अच्छी होने तथा अच्छी वर्षा से संबंधित है। सभी पर्व और त्यौहार में नृत्य एवं गीत का आयोजन किया जाता है। इन त्यौहार में मुर्गी, सुअर व बकरे की बलि दी जाती है एवं समुदाय के लोग मिलकर मद्यपान का सेवन भी करते हैं (Verma, 2022)।

बस्तर एक ऐसा प्रदेश है, जहाँ जनजातियों की पुरातन संस्कृति, वेशभूषा, सरल हृदय एवं विभिन्न आदिम परंपराएँ आज भी विद्यमान है। वास्तव में बस्तर अपनी जनजातीय संस्कृति से भारत ही नहीं, अपितु वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान रखता है (Verma, 2022)। माड़िया शब्द 'माड़' से ही बना है, जिसका अर्थ पहाड़ है। 'माड़' एक गोंडी शब्द है। इससे यह सिद्ध होता है कि पहले सभी माड़िया पहाड़ी थे। कालान्तर में जो माड़िया पर्वतों से नीचे मैदानी क्षेत्रों में उतर आये, वे दण्डामी माड़िया कहलाये। वैसे ये लोग अपने को 'कोयतूर' कहते हैं (Yadav evam Yadav, 2006)। दण्डामी माड़िया या बायसन हार्न माड़िया बस्तर की संस्कृति को एक खास पहचान देते हैं। यह एक प्रमुख जनजाति है, जो दक्षिण बस्तर में निवास करती हैं। इनके विशेष नृत्य में पहने जाने वाले गौर मुकुट के कारण, इन्हें बायसन हार्न माड़िया या गौर सिंग माड़िया भी कहा जाता है (Verma, 2022)। यह नाम इन्हें सर्वप्रथम प्रख्यात नृतत्वशास्त्री विल्फ्रेड ग्रिग्सन ने दिया था। ये अपने को 'कोयतोर' कहलाने में गर्व महसूस करते हैं (Grigson, 1938)।

शोध अध्ययन का उद्देश्य : प्रस्तुत शोध आलेख का मुख्य उद्देश्य माड़िया जनजाति के त्यौहारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। त्यौहारों में हुए परिवर्तनों के कारकों का अध्ययन, तथा त्यौहारों के महत्व को समझना है।

शोध प्रविधि : यह शोध बस्तर क्षेत्र के दंतेवाड़ा जिले की माड़िया जनजाति के द्वारा आयोजित किए जाने वाले त्यौहारों से संबंधित है। तथ्यों के संग्रहण के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि से कुंजी सूचनादाता में गायता, पेरमा, पुजारी, सिरहा का चयन किया गया है। 50 कुंजी सूचनादाता से त्यौहार से संबंधित जानकारी ली गई है। प्राथमिक स्त्रोत में अर्द्ध–सहभागी अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि तथा द्वितीयक स्त्रोत में जनजाति के

संस्कृति व लोक परंपरा से तथ्यों की जानकारी एकत्रित की गई है। इस शोध का विश्लेषण गुणात्मक विधि से किया गया है।

चर्चा एवं परिणाम :

पुना कुटूम तिंदाना (नया खानी) – यह त्यौहार गोंचा पर्व के अवसर पर 'गोंचा लेंज' अर्थात् (जुलाई माह) में मनाया जाता है। इस त्यौहार का मुख्य उद्देश्य वर्षा ऋतु के समय नए भाजी व नए कंदमूल का सेवन प्रारंभ करना है। नये सब्जियों जैसे– खट्टा भाजी, बास्ता, कोचई भाजी, पीपल भाजी, कोलियारी भाजी, चरोटा भाजी तथा वनों से अन्य प्राप्त भाजी एवं कंदमूल आदि शामिल किया जाता है। इस त्यौहार में गायता व पेरमा के द्वारा देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना की जाती है, जो धार्मिक विशेषज्ञ करते हैं। नई भाजी सब्जी का अर्पण सर्वप्रथम 'जागा देवी', देवगुड़ी व इसके पश्चात् 'आनल पेन' (ईष्टदेव) में किया जाता है। इस पूजा में फलों को अर्पण कर नई सब्जियों का सेवन करना प्रारंभ करते हैं।

कुर्मी (हरियाली) – इस त्यौहार का आयोजन **'**कोड़ता लेंज' अर्थात् (सितंबर माह) में किया जाता है। इस पर्व में फल–फूल व अनाज जैसे चिकमा, ईकमा, कुटकी इत्यादि का अर्पण देवी–देवताओं को किया जाता है उसके बाद सेवन प्रारंभ किया जाता है। सर्वप्रथम 'जागा', 'देवगुड़ी' तथा 'आनल पेन' (कुलदेव) में क्रमशः फलों का अर्पण कर सेवन करना प्रारंभ करते हैं। इस त्यौहार में देवी–देवताओं की पूजा गायता व पेरमा के माध्यम से की जाती है।

कोरता (कोसरा त्यौहार) – कोरता त्यौहार 'दिवाड़ लेंज' अर्थात् (अक्टूबर माह) में मनाया जाता है। इस त्यौहार में नये धान से चावल निकालकर सेवन किया जाता है। नये चावल की खिचड़ी बनाकर 'जागा' और 'देवगुड़ी' व 'आनल पेन' के देवी–देवताओं में गायता इसका भोग चढ़ाता है। इस पूजा के पश्चात् गांव के माड़िया समाज के सभी लोग नये चावल को सेवन करना प्रारंभ करते हैं। इस त्यौहार में लोकगीत का गायन भी किया जाता है।

पेन करसाड – पेन करसाड़ पर्व का आयोजन 'दशरा लेंज' अर्थात् (नवंबर माह) में किया जाता है। इस 'पेन करसाड़' पर्व को गांव के माड़िया समुदाय के एक गोत्र के सभी सदस्य मिलकर अपने ईष्टदेव की पूजा करते हैं। इस पर्व का उद्देश्य गोत्रीय परिवार के सभी सदस्यों के स्वास्थ्य की सुरक्षा व वंश को आगे बढ़ाने के लिए अपने 'पेन' देव की पूजा की जाती है। इस त्यौहार में गायता व पेन पुजारी द्वारा 'पेन' की पूजा–अर्चना की जाती है, तथा मुर्गा व बकरा की बलि भी दी जाती है।

करसाड़ – इस पर्व को 'बुर्द लेंज' अर्थात् (फरवरी माह) में आयोजित किया जाता है। 'करसाड़' शब्द गोंडी के 'कर्सना' शब्द से बना है जिसका अर्थ 'खेलना' है। करसाड़ अर्थात कुलदेव के सगा–संबंधी देवताओं का देवगुड़ी के परिसर में खेलना या नृत्य करना है। करसाड़ पर्व का आयोजन 'पेन' (कुलदेव) के मुख्य विराजित स्थल में किया जाता है। ये करसाड़ दंतेवाड़ा जिले के मसेनार ग्राम में 'आतरा' कुटुम्ब (परिवार) के 'पेन' (ईष्टदेव) का उत्सव मनाया गया है। बस्तर क्षेत्र के दंतेवाड़ा के मसेनार गांव में 12 'पल्ली' (गांव) से 'आतरा' कुटुम्ब के लोग कुलदेव के मुख्य विराजित स्थल पर एकत्रित होकर देवी–देवता के पूजा में शामिल होकर आर्शीवाद प्राप्त करते हैं। कुलदेव और आगमन हुए देवी–देवताओं की पूजा अर्चना कर उनकी सेवा की जाती है। इस क्षेत्र में करसाड़ पर्व के

अवसर पर कुछ ऐसे महिला एवं पुरूष, जिन्हें सिरहा एवं वड्डे के नाम से जाना जाता है जिनके शरीर में देवी–देवता का वास होता है और वे बाजा व मोहरी के धुन से उत्साह के साथ नृत्य करते हैं। इस अवसर पर प्रसन्नता के साथ सभी देवी–देवताएँ मिलकर नृत्य करते अथवा खेलते हैं जो करसाड़ का एक मुख्य अंग है। इस करसाड़ पर्व में कुटुम्ब परिवारजनों के साथ अन्य कुटुम्ब के लोग भी देवी–देवताओं का दर्शन करने आते हैं और बड़ी संख्या में महिलाओं व पुरूषों द्वारा करसाड़ नृत्य व गेड़ी नृत्य किया जाता है। इस प्रकार करसाड़ पर्व में जनजाति अपने आनंद को अभिव्यक्त करते हैं। इस पर्व में अण्डा, नारियल, अगरबत्ती, फल–फूल, मुर्गी व चावल शामिल होने वाले सदस्य अपने साथ लेकर आते हैं। इसमें देवी–देवताओं में महुआ शराब का तर्पण कर बकरे व मुर्गे की बलि दी जाती है। करसाड़ पर्व का मुख्य उद्देश्य एक कुटुम्ब अर्थात् 'मंडा' के समस्त परिवारजनों को एक सूत्र में बांधना है। समाज में एकता को मजबूत करना और भाईचारा, प्रेम व्यवहार को बढ़ावा देना है। संस्कृति को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करना है। यह पर्व आतरा कुटुम्ब के कुलदेव के सगा–संबंधी देवी–देवताओं का मिलन समारोह है।

इड़ू पंडुम (महुआ फूल त्यौहार) – ये त्यौहार 'बुर्द लेंज' अर्थात् (फरवरी–मार्च माह) में मनाया जाता है। इस त्यौहार का आयोजन महुआ फूल उठाने के पूर्व और महुआ फूल का सेवन करने के लिए किया जाता है। गायता व पेरमा अपने जागा, देवगुड़ी के देवी–देवताओं में महुआ फूल को अर्पित करने के पश्चात् वृक्ष से महुआ फूल उठाना और इस नई महुआ का फूल और महुवे मदिरा का सेवन करना प्रारंभ किया जाता है।

मरका पंडुम (आम फल का त्यौहार) – यह त्यौहार 'सइन लेंज' अर्थात् (मार्च–अप्रैल माह) में मनाया जाता है। इस त्यौहार का मुख्य उद्देश्य आम फल का सेवन प्रारंभ करने के लिए किया जाता है। गायता व पेरमा अपने जागा, देवगुड़ी के देवी–देवताओं में आम फल का अर्पण करते हैं, इसके पश्चात् सेवन करना प्रारंभ किया जाता है।

भीमसेन जातरा – यह जातरा 'गोंचा लेंज' (जुलाई माह) में मनाया जाता है। 'भीमसेन जातरा' आयोजित करने का उद्देश्य गांव में वर्षा की कमी होने पर अच्छी बारिश के लिए भीमसेन देव की पूजा–अर्चना पारंपरिक रूप से किया जाता है। भीमसेन देव को शीतला माता का भांजा के रूप में मान्यता प्राप्त है। भीमसेन जातरा की शुरूवात शीतला माता मंदिर से प्रारंभ किया जाता है। जातरा स्थल 'डोंगर देव' के पास सभी एकत्रित होते हैं। उस स्थल पर 'भीमसेन देव' और उसकी पत्नी 'भीमे' जिन्हें महुआ वृक्ष के काष्ठ का सीधा स्तंभ निर्मित प्रतीक चिन्ह के रूप में विराजित किया गया है। प्रत्येक तीन वर्षो में भीमसेन देव और भीमे देवी के विराजित पुराने काष्ठ को बदलकर नया काष्ठ में इन देवता को विराजित कर काष्ठ स्तंभ को स्थापित किया जाता है। माड़िया बुजूर्गों के मान्यतानुसार यदि देवों के विराजित काष्ठ को नहीं बदला जाता है तो गांव के सदस्यों को गंभीर बीमारी के संक्रमण होने का खतरा बना रहता है। सिरहा के शरीर में भीमसेन देव का वास कराया जाता है, तब पुजारी उनसे वर्षा होगी या नहीं इसके बारे में पूछता है। बलि देने के स्थान पर लाली, नारियल, कच्चा अण्डा, फूल, अगरबत्ती तथा पानी में भीगोया गया कच्चा चावल अर्पित करते हैं। भीमसेन देव के सामने चावल को रखकर पुजारी चावल को मुर्गी से चुगाते हैं। ग्रामीणों की मान्यता है कि जब देवी–देवता में बलि देने वाली मुर्गी व सुअर यदि चावल का सेवन करने में देरी करते हैं तो गांव की देवी के इच्छानुसार यह अनुष्ठानिक कार्य सफलतापूर्वक नहीं हुआ है तथा किसी ना किसी रूप में पिछले वर्ष गलती हुई थी, यह मान्यता है। तत्पश्चात् पुजारी द्वारा देवी–देवता से पिछले समय भूल से

हुई गलती के लिए क्षमा मांगकर उनके क्रोध को शांत करके अच्छी वर्षा कराने हेतु आग्रह करते हैं। यह आग्रह/विनती तब तक की जाती है जब तक मुर्गी या सुअर चावल का दाना चुग नहीं लेते। उनके चावल के दाने चुगाने के बाद ही यह माना जाता है कि देवी–देवता ने हमारी बात स्वीकार कर ली है। उसके बाद उसी मुर्गी/सुअर को बलि के रूप में देवी–देवता को अर्पित किया जाता है। देव स्थल पर बलि देकर मुर्गी के सिर को देवता में अर्पण करते हैं और धड़ के मांस को स्वयं पकाकर सेवन करते हैं। बलि दिये गए मुर्गी के मांस का सेवन सिरहा, गायता, पटेल तथा भीमसेन देव से संबंधित गोत्र वाले ही करते हैं।

विज्जा पंडुम (बीज त्यौहार) – इस त्यौहार का आयोजन वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व 'सुडलामण्ड लेंज' अर्थात् (जून–जुलाई माह) में किया जाता है। यह त्यौहार कृषि से संबंधित है। खेतों में धान बुवाई करने के पूर्व कृषि योग्य भूमि की जुताई प्रारंभ करने हेतु विज्जा पंडुम मनाया जाता है। इस पंडुम को एक गांव में निवासरत माड़िया समुदाय के सभी सदस्य मिलकर मनाते हैं। इस त्यौहार में पूजा सर्वप्रथम जागा में करके देवगुड़ी में किया जाता है। इस त्यौहार के बाद समुदाय के सभी लोग अपने खेतों की जुताई करते हैं। इस त्यौहार में पुरूष वर्ग द्वारा शिकार करने की परंपरा है।

त्यौहार में हुए परिवर्तन : माड़िया जनजाति के त्यौहारों में देवी–देवताओं के पूजा पद्धति में परिवर्तन नहीं हुआ है, किंतु त्यौहारों में उपयोगी उनके परंपरागत आभूषण, वेशभूषा, वाद्ययंत्र, लोकगीत व लोकनृत्य में परिवर्तन हो रहा है, जिसमें आधुनिकीकरण व संस्कृतिकरण का प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है। त्यौहारों में नृत्य करते समय परंपरागत आभूषण का प्रयोग न करके अब बाजार से उपलब्ध नकली आभूषण, काष्ठ व चमड़े से निर्मित परंपरागत वाद्ययंत्र और वेशभषा में रंगबिरंगे साड़ी का धारण करते हैं। 'बिढ़िया ढोल' व 'करसाड़ ढोल' के स्थान पर अब टीन से निर्मित वाद्ययंत्रका प्रयोग किया जा रहा है। डीजे म्यूजिक का प्रभाव परंपरागत लोकगीत व नृत्य की शैली पर पड़ा है।

त्यौहार का महत्व : इनके त्यौहार प्रमुखतः कृषि, मानव व पशु–पक्षियों के स्वास्थ्य पर आधारित होते हैं। माड़िया जनजाति के जीवन में त्यौहार उनकी संस्कृति, सामाजिक, प्रकृति एवं धार्मिक आस्था विश्वास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। माड़िया जनजाति के त्यौहार देवी–देवताओं में विश्वास प्रकृति से जुड़े हुए हैं। इनके द्वारा मनाये जाने वाले त्यौहारों में प्रत्यक्ष रूप से देवी–देवताओं का दर्शन सिरहा व गायता इन धार्मिक विशेषज्ञों के माध्यम से किया जाता है। यह त्यौहार माड़िया समुदाय के जीवन में धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व को दर्शाता है। यह समुदाय प्रकृति पूजक हैं, जो प्रकृति को देवता मानते हैं। इनके त्यौहार फसल, वन, नदियों और मौसम के बदलाव से जुड़े हुए हैं, तथा प्रकृति के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव भी है। त्यौहारों में गांव के माड़िया समुदाय के सभी सदस्यों की सहभागिता होती है। लोग मिलकर नृत्य, गीत और पूजा करते हैं, जिससे आपसी भाईचारा और एकता बढ़ती है। सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक, प्रकृति, आस्था व विश्वासों का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बस्तर के माड़िया जनजाति के त्यौहारों में पारंपरिक वेशभूषा, लोकगीत, लोकनृत्य और रीति–रिवाज दिखाई पड़ते हैं। ये त्यौहार उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने में मदद करता है।

निष्कर्ष : बस्तर की माड़िया जनजाति के द्वारा आयोजित त्यौहार सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक संरचना और प्राकृतिक जीवन–दर्शन का प्रतीक है, जो त्यौहारों की परंपरा और परिवर्तन के मध्य संतुलन बनाए रखती है। ये त्यौहार धार्मिक व आध्यात्मिक रूप से

देवी–देवताओं में विश्वास व प्रकृति से जुड़ा हुआ है। इनके त्यौहार केवल धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, अपितु सामाजिक संगठन को सशक्त बनाना और सांस्कृतिक निरंतरता का माध्यम है। इनके त्यौहार का आयोजन मुख्यतः कृषि व स्वास्थ्य पर आधारित है। त्यौहार में माड़िया जनजाति के सभी सदस्यों की सहभागिता होती है, जो सामाजिक एकता को बनाए रखता है। सांस्कृतिक लोक जीवन को संरक्षित रखने का प्रयास करता है। त्यौहारों के माध्यम से गायता, पेरमा, सिरहा, पुजारी एवं बुजूर्गो द्वारा नई युवा पीढ़ी को मौखिक रूप से पारंपरिक कला, लोकगीत, लोकनृत्य, रीति–रिवाज, कहानियों व लोक ज्ञान की परंपराओं को हस्तांतरण किया जाता है। हालांकि आधुनिकता परिवर्तन और बाह्य प्रभावों के कारण इनकी परंपराओं में कुछ परिवर्तन आए हैं, फिर भी इन त्यौहारों की भावना और सांस्कृतिक महत्व आज भी जीवित है।

आभार ज्ञापन रू प्रस्तुत शोध पत्र ''समकालीन परिप्रेक्ष्य में माड़िया जनजाति का शिल्पकला और लोकपरंपराओं की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ (छत्तीसगढ़ के दक्षिण–पश्चिम क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)'' शीर्षक से संचालित शोध परियोजना पर आधारित है, जिसे ICSSR, नई दिल्ली द्वारा वित्तपोषित किया गया (फाइल संख्या – ICSSR/RPD/RPR/2023-24/43) है। सभी लेखकों के द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता एवं सहयोग के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Vaishnav, H. (2014). *Bastar ki Aadivasi evam Lok Hastshilp Parampar (in Hindi).* Delhi: Radhakrishan Prakashan. Pg. 286
2. Alang, S. evam Alang, S. (2015). *Chhattisgarh ke Hastshilp (in Hindi).* Illahabad : Anamika Prakashan. Pg. 51.
3. Nuruti, K. (2022). *Gondoki Pen Vyavastha Uttar Bastar [in Hindi].* H.S.R.A. Publications.
4. Verma, N. (2022). *Janjatiya Sanskriti: Bastar Kshetra ka Vyapak Adhyayan (in Hindi).* Nai Delhi: Rawat Publication. Pg. 183
5. Yadav, R. evam Yadav, S. (2026). *Chhattisgarh ki Janjatiyan (in Hindi).* Bilaspur (C.G.): RK Publication. Pg. 149.
6. W. V. Grigson. (1938). *The Maria Gonds of Bastar.* Oxford University Press, pp. 1-284.